भारत की सुरक्षा नीति का विकास

(Evolution of India's Security Policy)

अपनी स्वतन्त्रता के बाद भारत ने अपनी स्वतन्त्रता व सुरक्षा को सुनिश्चित व सुद ढ़ करने के लिए गुटनिरपेक्षता की नीति को ही अपनाया। इस दौरान भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति ही भारत की सुरक्षा की नीति थी। इस नीति को राष्ट्रीय सुरक्षा का सुरक्षा कवच माना गया। भारत न तो किसी ऐसे सैनिक गठबन्धन में शामिल होना चाहता था जिसका गठन शीतयुद्ध के सन्दर्भ में किया गया था, और न सामूहिक सुरक्षा की किसी व्यवस्था का सदस्य बनना चाहता था। स्वतन्त्रता के बाद भारत द्वारा इस नीति को अपनाने के पीछे मूल कारण यह था कि भारत न तो आर्थिक द ष्टि से ही महाशक्तियों की बराबरी कर सकता था और वह सैनिक द ष्टि से भी काफी कमजोर था। इसलिए भारत ने दोनों गुटों के साथ समान नीति अपनाई ताकि दोनों देशों से अधिक से अधिक आर्थिक सहायता प्राप्त की जा सके। इसी नीति के तहत भारत राष्ट्रमण्डल का सदस्य भी बना रहा। इसका प्रमुख लाभ यह हुआ कि 1962 के चीनी आक्रमण के बाद भी भारत के पश्चिमी देशों से सम्बन्ध स्थापित करने के विकल्प खुले रहे। इस तरह 1962 से पहले भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति ही उसकी सुरक्षा नीति बनी रही। नेहरु जी ने इस नीति को अपनाते हुए कहा, "हमारे पास हथियार नहीं हैं इसलिए हमें गुटनिरपेक्षता की नीति ही अपनानी चाहिए।" नेहरु जी अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति में ही भारत की सुरक्षा का स्वप्न देखते थे। इसलिए उन्होंने पंचशील सिद्धान्त का विकास करके शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना के आधार पर ही अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति को पोषित किया।

1962 तक भारत ने कभी भी युद्ध के सिद्धान्त या रक्षा के सिद्धान्त का विकास नहीं किया। इस दौरान नेहरु की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य शान्ति को विकास द्वारा मानवता का कल्याण होने के कारण सैन्य विकल्प के विकास की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया और राष्ट्रीय सुरक्षा के

सन्दर्भ में सैन्य विशेषज्ञता का पूर्ण अभाव रहा। इसका प्रमुख कारण भारत के पास अपनी सुरक्षा हेतु सीमित विकल्पों का होना था। अपनी स्वतन्त्रता के बाद अपनी कमजोर आर्थिक शक्ति के कारण भारत के लिए सुरक्षा नीति का विकास करना पूर्णतया असम्भव था। यद्यपि इसी दौरान भारत के पाकिस्तान तथा चीन के साथ तनावपूर्ण सम्बन्धों का जन्म हो चुका था। शीत युद्ध के वातवारण ने भी भारत की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौतियां पेश की, परन्तु फिर भी भारत ने अपनी कोई सुरक्षा नीति विकसित करने में असमर्थता ही दिखाई। इसकी बजाय भारत ने अपनी सुरक्षा को सुद ढ़ करने के लिए सैन्य विकास के स्थान पर पंचशील जैसे राजनैतिक तरीकों को ही महत्व दिया और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से ही अपने विवादों को शांतिपूण्र ढंग से हल करने को प्राथमिकता दी। भारत ने कश्मीर विवाद को संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से तथा तिब्बत व सीमा-विवाद को पंचशील सिद्धान्त के आधार पर ही हल करने का प्रयास किया। इस तरह नेहरु युग में राष्ट्रीय सुरक्षा पर कोई नीति विकसित नहीं ही गई।

1962 से पहले भारत की सुरक्षा नीति के कोई व्यावहारिक परिणाम नहीं निकले और चीन व पाकिस्तान ने भारत की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती दी। नेहरु की गुटनिरपेक्षता की नीति के रूप में भारत की सुरक्षा व्यवस्था को उस समय करारा झटका लगा जब चीन ने 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। इससे भारत की शांतिपूर्ण सहअस्तित्व पर आधारित विदेश नीति कोरी कल्पना साबित हुई। 1962 तक नेहरु द्वारा निर्धारित भारत की विदेश नीति की आलोचना करते हुए प्रो० ए०बी० शाह ने कहा है-"नेहरु की विदेश नीति अव्यवहारिक थी और नेहरु सुरक्षा के प्रति सबसे ज्यादा उदासीन थे।" इसके बाद भारत ने अपनी सुरक्षा नीति का विकास करने का मार्ग अपनाया जिसमें इन्दिरा गांधी का योगदान सर्वाधिक रहा। 1964 में चीन द्वारा परमाणु विस्फोट करने के बाद भारत की सुरक्षा व्यवस्था को उत्पन्न संकट के सन्दर्भ में इन्दिरा गांधी ने अपनी गुटनिरपेक्षता को यथार्थवादी बनाते हुए परमाणु परीक्षण का कार्यक्रम बनाया। इन्दिरा गांधी ने सीमाओं पर चौकसी बढ़ाई और सैन्य सेवाओं का आधुनिकीकरण किया। इन्दिरा गांधी ने सैन्य खर्च में व द्धि करके भारत को सुरक्षा के मामले में आत्मनिर्भर किया।

1962 के चीनी आक्रमण के बाद भारत की विदेश नीति में व्यापक बदलाव देखने को मिला। भारत ने नेहरु की विदेश नीति की पुनःसमीक्षा की और अपने पड़ोसी देशों, अमेरिका तथा रूस के साथ नए सिरे से सम्बन्ध स्थापना के प्रयास शुरु किए। नई सरकार ने नेहरु युग में अपनाई गई नीतियों को बदलकर भारत की सुरक्षा नीति के विकास के लिए सैन्य आत्मनिर्भरता के प्रयास शुरु किये और महाशक्तियों से मित्रता की। अब भारत ने अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति का नए सिरे से आकलन किया। 1965 में भारत पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण ने भारत को अपनी सैन्य शक्ति का विकास करने की नीति अपनाने को बाध्य कर दिया। चीन-पाक सन्धि के द ष्टिगत भारत द्वारा सैन्य नीति का विकास और अधिक जरूरी हो गया। अब भारत को चीन के साथ-साथ पाकिस्तान से भी खतरा था। इसलिए भारत ने सैन्य आत्मनिर्भरता के साथ-साथ भारत ने शक्तियों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्धों के विकास की नीति अपनाई। उसने चीन के साथ भावी युद्ध की सम्भावनाओं के मध्येनजर अमेरिका तथा ब्रिटेन से भी मदद प्राप्त की और 1971 की स्थिति को देखते हुए उसने सोवियत संघ के साथ एक मैत्री व सहयोग की सन्धि भी की। इस दौरान भारत ने अपने राष्ट्रीय सुरक्षा के हित के द ष्टिगत परमाणु अप्रसार सन्धि (NPT) पर भी हस्ताक्षर नहीं किये।

भारत ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए महाशक्तियों के साथ सम्बन्ध कायम करने के साथ-साथ सैन्य नीति का विकास भी जारी रखा और अपनी सुरक्षा नीति को सुद ढ़